मेरी बांग्लादेश यात्रा

सेराज ख़ान बातिश

3-बी, बंगाली शाह वारसी लेन, खिदिरपुर, कोलकाता -700023
मो. 9339847198

बांग्लादेश हमारे पड़ोसी राष्ट्रों में सबसे निकट मित्र देश है। इस देश पर इसलिए भी हमारा दोस्ताना हक है कि इसकी स्वतंत्रता में हमने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। बांग्लादेश को परदेश कहने में थोड़ी सी असुविधा सी होती है क्योंकि कोलकाता से बांग्लादेश की सीमा मात्र 242 किलोमीटर की है जो हमारे उत्तरप्रदेश के गांव से बहुत निकट है कोई इसकी यात्रा पर जाए तो लगता है कि बगल के किसी गांव शहर में गया हुआ है।

प्रायः यह धारणा है कि हिंदी में सफरनामा यात्रा वृत्तांत कम लिखे गए हैं और पश्चिम बंगाल में तो एकदम नहीं जबकि हर चौथा पांचवां व्यक्ति देश-विदेश की यात्रा पर सवार है। लेकिन यह सुखद आश्चर्य की बात है कि कवि, व्यंग्यकार रावेल पुष्प (खानूजा) ने 20 वर्षों के बाद अपनी दूसरी पुस्तक कविता के इतर लाकर यात्रा साहित्य पर प्रकाशित की है। इस सूखे पड़े क्षेत्र में कम-से-कम बूंदाबांदी तो की उन्होंने।

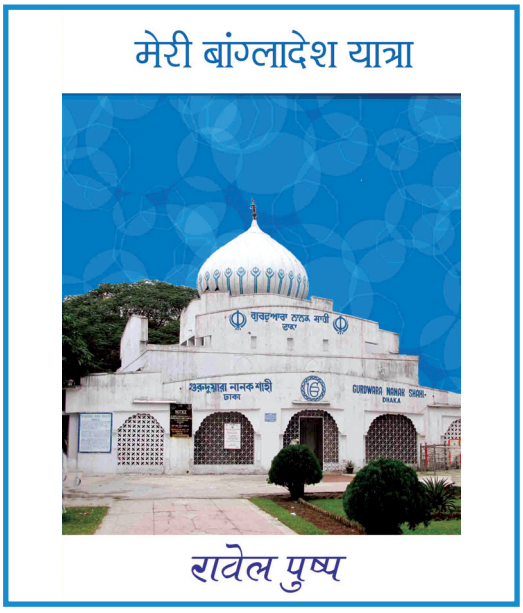

कवि- कथाकार ग़ज़लकार लेखक पत्रकार से भरे इस महानगर में शायद यात्रा संस्मरण की ओर बुद्धिजीवियों का ध्यान नहीं गया है। संभव है रावेल की इस कोशिश के बाद लोग इस विधा को साधने का प्रयास करें। रावेल पुष्प की यह पुस्तक 'मेरी बांग्लादेश यात्रा' हमें कई प्रकार के अनुभवों से परिचित कराती है। हम अनुभूति कर सकते हैं कि बांग्लादेश हमारे संस्कारों, विचारों और धार्मिक भावनाओं के कितना करीब है।

यह सच है कि बांग्लादेश एक मुस्लिम राष्ट्र होते हुए भी हिंदू संस्कारों से प्रभावित है। एपार और ओपार बांग्ला संस्कृति में कोई अंतर नहीं। जहां एक बांग्ला बोलने वाला हिंदू बंगाली से बांग्ला बोलने वाला मुस्लिम बंगाली प्रभावित होगा उतना उर्दू, हिंदी बोलने वाले मुसलमान या हिंदू से प्रभावित नहीं होगा। कहा जा सकता है कि कोई भी बंगाली पहले बंगाली होता है उसके बाद हिंदू या मुसलमान। बंगालियों ने यह सिद्ध कर दिया है कि मनुष्य को मातृभाषा से प्रिय और कोई वस्तु नहीं। मनुष्य जाति बदल सकता है, धर्म बदल सकता है, देश बदल सकता है मगर भाषा मातृभाषा नहीं।

रावेल ने अपनी संकीर्तन टोली की यात्रा में सिख धर्म के साथ-साथ दो धर्मों की एक भाषा संस्कृति से परिचय कराया है और यह बताने की कोशिश की है कि मनुष्य की मातृभाषा उसके धर्म जाति से भी अधिक महत्वपूर्ण है, नहीं तो भाषा के मुद्दे पर एक देश अपने मूल से टूटकर आजाद नहीं होता। कुछ ऐसी ही स्थिति तुर्की में अतातुर्क कमाल पाशा के समय में उत्पन्न हुई थी। कमाल पाशा ने अपनी मातृभाषा तुर्की पर अरबी

पुस्तक : मेरी बांग्लादेश यात्रा
लेखक : रावेल पुष्प
प्रकाशक : शुक्तिका प्रकाशन ,कोलकाता
मूल्य : 100/-